।। ॐ शिव गोरक्षः ।।

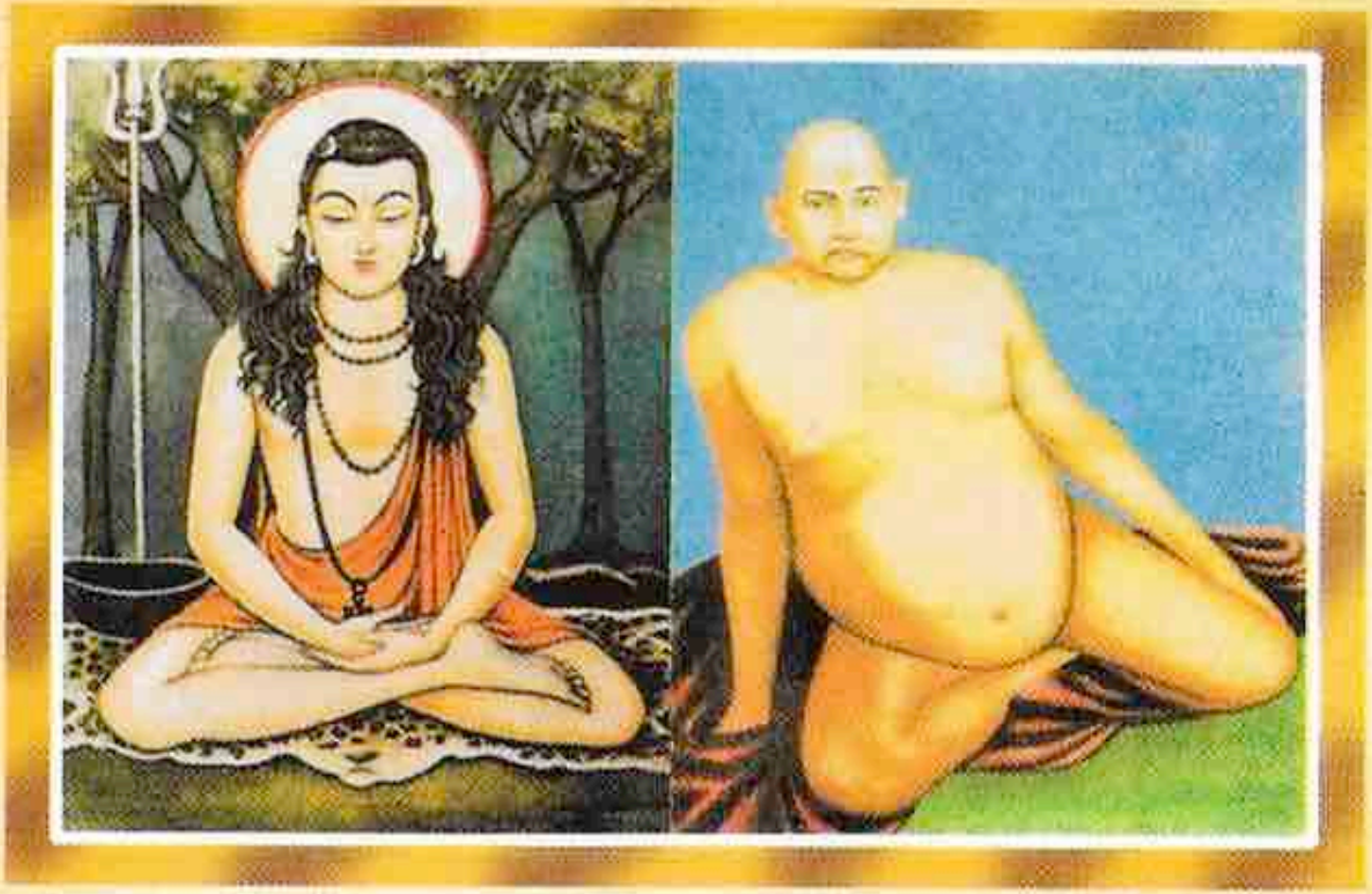

श्री गोरक्ष चालीसा एवं गुरु महिमा

ॐ विलक्षणावधूताय विद्महे सद्गुरुदेवाय
धीमहि तन्नोऽमृतनाथः प्रचोदयात्।

ॐ शिव गोरक्ष

।। सुबह की प्रार्थना ।।

(श्री गोरक्ष-चालीसा)

जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।
कृपा करो गुरुदेव प्रकाशी।।
जय जय जय गोरक्ष गुणखानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी।।
अलख निरंजन तुम्हारो नामा।
सदा करो भक्तन हित कामा।।

नाम तुम्हारो जो कोई गावे ।
जन्म जन्म के दुःख नसावे ।।
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे ।
भूत-पिसाच निकट नहीं आवे ।।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे ।
रूप तुम्हारा लखा न जावे ।।
निराकार तुम हो निर्वाणी ।
महिमा तुम्हारी वेद बखानी ।।
घट-घट के तुम अनतर्यामी ।
सिद्ध चौरासी करे प्रणामी ।।

भस्म-अंग, गले-नाद बिराजे ।
जटा शीश अति सुन्दर साजे ।।
तुम बिन देव और नहि दूजा ।
देव मुनीजन करते पूजा ।।
चिदानन्द भक्तन-हितकारी ।
मंगल करो अमंगलहारी ।।
पूर्णब्रह्म सकल घटवासी ।
गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी ।।
गोरक्ष-गोरक्ष जो कोई गावै ।
ब्रह्मस्वरूप का दर्शन पावै ।।

शंकर रूप धर डमरू बाजे ।
कानन कुण्डल सुन्दर साजै ।।
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा ।
असुर मार भक्तन रखवारा ।।
अति विशाल है रूप तुम्हारा ।
सुर-नर मुनि पावै नहिं पारा ।।
दीनबन्धु दीनन हितकारी ।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी ।।
योग युक्त तुम हो प्रकाशा ।
सदा करो संतन तन वासा ।।

प्रातःकाल ले नाम तुम्हारा ।
सिद्धि बढ़ै अरु योग प्रचारा ।।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी ।
अपने जन की हरो चौरासी ।।
अचल अगम है गोरक्ष योगी ।
सिद्धि देओ हरो रस भोगी ।।
काटो राह यम की तुम आई ।
तुम बिन मेरा कौन सहाई ।।
कृपा-सिंधु तुम हो सुखसागर ।
पूर्ण मनोरथ करो कृपा कर ।।

योगी-सिद्ध विचरें जग माही ।
आवागमन तुम्हारा नाहीं ।।
अजर-अमर तुम हो अविनाशी ।
काटो जन की लख-चौरासी ।।
तप कठोर है रोज तुम्हारा ।
को जन जाने पार अपारा ।।
योगी लखै तुम्हारी माया ।
परम ब्रह्म से ध्यान लगाया ।।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे ।
अष्ट सिद्धि नव निधि धर-पावे ।।

शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा ।
पापी अधम दुष्ट को तारा ।।
अगम अगोचर निर्भय नाथा ।
योगी तपस्वी नवावै माथा ।।
शंकर रूप अवतार तुम्हारा ।
गोपीचन्द - भरतरी तारा ।।
सुन लीज्यो गुरु अर्ज हमारी ।
कृपा - सिन्धु योगी ब्रह्मचारी ।।
पूर्ण आश दास की कीजे ।
सेवक जान ज्ञान को दीजे ।।

पतित पावन अधम उधारा ।
तिन के हित अवतार तुम्हारा ।।
अलख निरंजन नाम तुम्हारा ।
अगम पंथ जिन योग प्रचारा ।।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी ।
सेवा करै सिद्ध चौरासी ।।
सदा करो भक्तन कल्याण ।
निज स्वरूप पावै निर्वाण ।।
जो नित पढ़े गोरक्ष चालीशा ।
होय सिद्ध योगी जगदीशा ।।

बारह पाठ पढ़ै नित जोही ।
मनोकामना पूरण होही ।।
धूप दीप से रोट चढ़ावै ।
हाथ जोड़कर ध्यान लगावै ।।
अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार ।
कानन कुण्डल-सिर जटा, अंग विभूति अपार ।।
सिद्ध पुरुष योगेश्वर, दो मुझको उपदेश ।
हर समय सेवा करूँ, सुबह शाम आदेश ।।
सुने सुनावें प्रेमवश, पूजे अपने हाथ ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरक्षनाथ ।।

ॐ शान्ति ! प्रेम ! ! आनन्द ! ! !

॥ प्रार्थनाष्टक ॥

व्याधिटारण तप्त-जारण, काम-मारण रक्षमाम्,
योग-धारी, न्यायकारी, निर्विकारी पाहिमाम् ।
भेद-भञ्जन, भक्त-रञ्जन, सत्य-सुख के धाम है,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ १ ॥

पापहारी मोक्षकारी, सत्यधारी अति सुखी,
श्रेष्ठ-ज्ञानी निरभिमानी, भेद पाते गुरुमुखी ।
सत्य-शिक्षा योग-दीक्षा, भक्त के विश्राम है,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ २ ॥

ब्रह्मचारी दम्भहारी, मोहमारी भय-हरण,
तत्व-ज्ञाता, बुद्धि-दाता, नमो हे अशरण-शरण ।
चक्र-भेदन भ्रान्ति-छेदन, दर्श तव अभिराम है,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ३ ॥

भक्त रक्षक दुःख भक्षक, सुषुम्ना में शान्त हैं,
तुरीयवासी, भ्रम-विनाशी, सर्वथा निर्भ्रान्ति है ।
ब्रह्मरत हैं, ज्ञान पथ हैं, दयामत अविराम हैं,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ४ ॥

अमिट सत्ता अटल वाणी, आप तन्मय आप में,
नहीं कृत्रिम योग जप, तप लीन अजपा जाप में।
सेवा, सेवक और सेवाभाव, आतम राम है,
ख्यात, 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ५ ॥

ब्रह्मवेत्ता उर्ध्वरेता, पक्षपात न नेक है,
ध्यान भोतिक देह का नहि, सत्य सन्तत टेक है।
स्वर्ग-नरक विचार नहीं, अपवर्ग जिनका धाम है,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ६ ॥

शरण आया, तत्व पाया, भेद अपना जानिया,
खेद भव का हट गया, उपदेश जिसने मानिया।
अशरण शरण, कारण-करण, भव-भय हरणनिष्काम हैं,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ७ ॥

सन्त ध्यावे, मुक्ति पावे, भक्त अन-धन-पावते,
दुःख दुखिया के हरो 'शंकर' विमल यश गावते।
श्री चरण सुन्दर मनोहर, सकल सुख के धाम हैं,
ख्यात 'अमृतनाथजी' तोहि बारम्बार प्रणाम है ॥ ८ ॥

ॐ शान्ति ! प्रेम ! ! आनन्द ! ! !

॥ प्रार्थनाष्टक ॥

विलक्षण महा अन्धकारं विनाशी,
गुण-तीत रूपं सुषुम्ना विलासी ।
सदा सर्वदा भक्त मण्डल सुसेवं,
नमो योगी राजं 'अमृतनाथ' देवं ॥ १ ॥

दयालु महा दीन के दुख हारी,
निरालम्ब अवलम्ब हे निर्विकारी ।
सदा सत्य शिक्षा हटाती कुटेवं,
नमो योगी राजं 'अमृतनाथ देवं' ॥ २ ॥

महा ब्रह्मचारी बड़े तत्व ज्ञाता,
अनुपम बली हो अभय दान दाता।
अनोखे सती हो, अपारं अभेवं,
नमो योगी राजं 'अमृत नाथ' देवं ॥ ३ ॥

अचल समाधी नही को उपाधी,
सुधारे प्रमादी, हरो भक्त व्यादि।
महा शून्य बासी सगुण हो तथैवं,
नमो योगी राजं, 'अमृत नाथ' देवं ॥ ४ ॥

प्रभो गौर वर्ण नमो व्याधि हरणं,
महा तेज धारी गहे भक्त शरणं ।
नयनाभिरामं दयालु सदैवं,
नमो योगी राजं, 'अमृतनाथ' देवं ॥ ५ ॥
प्रभो पूर्ण योगी सकल भाव ज्ञाता,
सदा भक्त त्राता सुभक्ति प्रदाता ।
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ निष्पृह सदैवं,
नमो योगी राजं, 'अमृत नाथ' देवं ॥ ६ ॥

काषाय वस्त्र लसे कर्ण मुद्रा,
हते काम क्रोध लिये जीत निद्रा ।
किये मुक्त पापी उदासी एवं,
नमो योगी राजं, 'अमृत नाथ' देवं ॥ ७ ॥

कई भक्त तारे सदा कष्ट टारे,
दियी सत्य शिक्षा हरे दोष भारे ।
भयंकर हरो पीर 'शंकर' सुसेवं,
नमो योगी राजं, 'अमृत नाथ' देवं ॥ ८ ॥

।। प्रभात-वंदना ।।

प्रातः उठकर तव चरणन का ध्यान धरूँ मै हे गुरुदेव ।
प्रकटे शुभ संकल्प हृदय में, अरू क्षमता समता की टेव ।। १ ।।
नियम पूर्वक सौच, स्नान अरु ध्यान, प्रार्थना पठन करूँ ।
शिष्टाचार करूँ महंतो का, मित्रों में प्रिय भाव भरूँ ।। २ ।।
यथा शक्ति दीन-दुखियों की, सेवा अरु सहायता करूँ ।
अरु जीवन निर्वाह हेतु मैं, योग्य उचित व्यवसाय करूँ ।। ३ ।।
भ्राता सम है पुरुष जगत के, और नारियाँ बहिन समान ।
सदा यही धारणा रहे अरु, करता रहूँ अतिथि सम्मान ।। ४ ।।

चाहे जैसा कष्ट मिले पर कभी असत्य न मार्ग गहूँ ।
सद्ग्रन्थों का करूँ अध्ययन, सन्त जनों के संग रहूँ ।। ५ ।।
बना रहूँ निर्भीक, सत्य आचरण रहे गुरुवर मेरा ।
हल्का सादा-सात्विक भोजन, करूँ जो है आदेश तेरा ।। ६ ।।
आप सर्व व्यापक है भगवन, हृदय नाथ, करूणा सागर ।
संचालित करते सब जग को, उचित रूप से नटनागर ।। ७ ।।
तव शिक्षा अनुकूल श्वास का ध्यान, नहीं बिसरे मेरा ।
हे शंकर ! शंकर पद पाऊँ, 'शंकर' तब चरणन का चेरा ।। ८ ।।

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव
ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव

॥ प्रभाती ॥

जागो सत गुरू दयाल, भक्त जन पुकारे ।
तन, मन, धन, वारन को, आय खड़े द्वारे ॥ १ ॥
हिम कर निजधाम गया, उड़गन विश्राम लिया ।
पक्षिन कुहराम किया, आलस तज डारे ॥ २ ॥
दिन मणि का तेज भया, रात्रि तम दूर गया ।
सन्तन आनन्द लहा, जयति जय उचारे ॥ ३ ॥
दानी बहुदान करे, ध्यानी तब ध्यान करे ।
ज्ञानी एकान्त बैठ, तत्व को विचारे ॥ ४ ॥

रति पति शिव गुण अपार, लोभ मोह प्रबल धार।
एक द्रव्य और नार, जडमत कर डारे ॥ ५ ॥
अमृत आनन्द रूप एक छत्र सुखद भूप ।
शंकर महिमा अनूप, सकल दोष टारे ॥ ६ ॥

॥ शिव-गोरक्ष-धुन ॥

ॐ शिव-गोरक्ष, जय, शिव-गोरक्ष !
ॐ शिव-गोरक्ष, जय, शिव-गोरक्ष !
ॐ शान्ति ! प्रेम !! आनन्द !!!

॥ श्री गुरु प्रार्थना और महिमा ॥

ॐ गुरुदेवाय नमः

आदि मध्य नहीं अन्त है, बने मिटे कछु नाहिं ।
अमृत रहता एक रस, तीन काल के माहि ॥ १ ॥
नमो सच्चिदानन्द को, नमस्कार सब वेश ।
सतगुरु चम्पा नाथ को, बार बार आदेश ॥ २ ॥
सतगुरु प्रबल समर्थ है, दयासिन्धु जगदीश ।
'अमृत' निशदिन चरण में, नम्र होय धर शीष ॥ ३ ॥

अधम उबारण भय हरण, सतगुरु परम दयालु ।
गुरु बिन दूजा है नहीं, 'अमृत' शीघ्र कृपालु ॥ ४ ॥
जिसकी गुरु रक्षा करें, उसको दुःख न नेक ।
'अमृत' चित में धारिये, दृढ़ कर ऐसी टेक ॥ ५ ॥
सतगुरु 'चम्पानाथ' को बार बार बलि जाहु ।
सत्य वचन 'अमृत' कहे, मम मति अमल उछाहु ॥ ६ ॥
एक भरोसा एक बल, नहीं अन्य विश्वास ।
'अमृत' निशदिन हो रहो, गुरु चरणन का दास ॥ ७ ॥
जिससे सतगुरु को किया, अर्पण अपना शीष ।
मिलती उसे अवश्य है, मुक्ति विश्वा बीस ॥ ८ ॥

सतगुरु सन्मुख ना द्रवे, धृक वह बुद्धि विवेक ।
'अमृत' व नहीं पायेंगे, मनुज जन्म फल नेक ॥ ९ ॥
गुरु आज्ञा दे सो करे, देख करे कछु नाहिं ।
ऐसे गुरु मुखि पायेंगे, सत्य पथ जग के माहिं ॥ १० ॥
सतगुरु की शिक्षा बिना, छुटे नहीं विवाद ।
'अमृत' गुरु को ढूँढ ले, होवे दूर विषाद ॥ ११ ॥
गुरु चरणन की धूरि को धूर धूर कर जीव ।
दूर दूर हो कपट से, भूरि - भूरि मिल पीव ॥ १२ ॥
अब तो मुर्ख सचेत हो, आयु चली है बीत ।
'अमृत' गुरु की शरण में सीख भजन की रीति ॥ १३ ॥

॥ कुण्डलियां ॥

मानव तन में जो तुझे पाना है आनन्द ।
गुरु चरणन की शरण हो, दूर होय भव फन्द ॥
दूर होय भव फन्द, भेद अन्तर का जाने ।
मन चञ्चल थक जाय, रूप अपना उर आने ॥
कहते 'अमृतनाथ' शान्ति आवे तब मन में ।
'शंकर' दर्शन होय ब्रह्म का मानव तन में ॥

दोहा

जय सतगुरु अशरण, शरण, शरणागत प्रतिपाल ।
विषय वासना हरण तुम, मेंटन भव के जाल ॥

॥ प्रार्थना महिमा ॥

करते करते प्रार्थना सुन लेते भगवान ।
दया करे 'शंकर' तभी, बन जाते मतिमान ॥ १ ॥
करते करते प्रार्थना निर्मल होवे गात ।
विषय भोग से चित हटे मन हो जावे मात ॥ २ ॥
करते करते प्रार्थना, बनती बुद्धि पवित्र ।
'शंकर' सुख की प्राप्ति हो, निर्मल बने चरित्र ॥ ३ ॥
करते करते प्रार्थना, क्रोध काम हट जाय ।
शम दम शक्ति सचेत हो, घट में समता आय ॥ ४ ॥
करते करते प्रार्थना, हटे जगत से हेत ।
समय पाय मिल जात है, भवसागर का सेत ॥ ५ ॥

करते करते प्रार्थना, निष्पृहता आ जाय ।
'शंकर' तृष्णा दूर हो, तब नहीं जगत सुहाय ॥ ६ ॥
निश्चल मन से प्रार्थना, करते जो मतिमान ।
हो गद्गद् रोने लगे, पहुँचे 'शंकर' कान ॥ ७ ॥
जा बैठे एकान्त में, त्याग जगत से नेह ।
गद्गद् हो विनती करे सुधरे मानव देह ॥ ८ ॥
कूक कूक विनती करे, ममता मद हट जाय ।
समता, दृढ़ता प्रकट हो, चार पदारथ पाय ॥ ९ ॥
नित प्रति विनती कीजिए, प्रेम भाव के साथ ।
'शंकर' निश्चय मिलेगा, सकल जगत का तात ॥ १० ॥

।। शाम की प्रार्थना ।।

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की प्रार्थना

ॐ जय गोरक्ष देवा, श्री स्वामी जय गोरक्ष देवा ।
सुर-नर मुनिजन ध्यावै, संत करत सेवा ।। ॐ जय ।।
ॐ गुरुजी योग युक्ति कर जानत-मानत ब्रह्मज्ञानी ।
सिद्ध शिरोमणि राजत गोरक्ष गुणखानी ।। ॐ ।।
ॐ गुरुजी ज्ञान-ध्यान के धारी सबके हितकारी ।
गो इन्द्रियन के स्वामी राखत सुध सारी ।। ॐ ।।
ॐ गुरुजी रमते राम सकल जग मांही छाया है नाहीं ।
घट-घट गोरक्ष व्यापक सो लक्ष घट मांही ।। ॐ ।।

ॐ गुरुजी भस्मी लसत शरीरा रजनी है संगी ।
योग विचारक जानत योगी बहु संगी ।। ॐ जय ।।
ॐ गुरुजी कंठ विराजत सींगी सेली, जतमत सुखमेली।
भगवां कन्था सोहत ज्ञान रतन थेली ।। ॐ जय ।।
ॐ गुरुजी कानन कुण्डल राजत साजत रवि चंदा ।
बाजत अनहद बाजा भागत दुःख द्वन्दा ।। ॐ जय ।।
ॐ गुरुजी निद्रा मारो काल संहारो संकट के बैरी ।
करो कृपा सन्तन पर, शरणागत थारी ।। ॐ जय ।।
ॐ गुरुजी ऐसी गोरक्ष आरती निशि दिन जो गावै ।
वर्णे राजा रामचन्द्र योगी सुख-सम्पति पावै ।। ॐ जय ।।

।। श्री सतगुरु देव की प्रार्थना ।।

ॐ जय सतगुरु दाता, स्वामी जय सतगुरु दाता ।
त्रिगुण रहित निर्वाणी जग में विख्याता ।। ॐ जय ।।
चेतन रूप निरंजन आप पिता-माता ।
भक्तन के हितकारी सदा सुखी नाता ।। ॐ जय ।।
आदि सनातन देवा अगम ज्ञान-ज्ञाता ।
दुःख हरता, सुख-कर्ता सत्य रूप भाता ।। ॐ जय ।।
मन के रोग मिटावन पावन पथ जाता ।
शील क्षमा गुण-आगर शरणागत त्राता ।। ॐ जय ।।

शांति रूप शरीरा नाशक भव-पीरा ।
सुख सागर के नीरा भक्तन के नाता ॥ ॐ जय ॥
आदि पुरुष अविनाशी, संतन-घट-वासी ।
भव-सागर दुख नाशी सतसुख के दाता ॥ ॐ जय ॥
अगम अगोचर स्वामी आप अन्तर्यामी ।
अमर लोक के धामी संतन मन राता ॥ ॐ जय ॥
सत्य रूप भय हारी कामादिक मारी ।
भक्तन के अघ-हारी पार नहीं पाता ॥ ॐ जय ॥
श्री अमृतनाथजी दयाला हरिए भव जाला ।
शंकर कर प्रतिपाला चरणन बलि जाता ॥ ॐ जय ॥

॥ गुरू-महिमा ॥

ओइमकारा जय जय कारा,
सब संतन मिल करया विचारा ।
गुरु की महिमा अपरंपारा,
सो गावें सनकादिक सारा ।
गुरु विश्वंभर परमं धाम,
गुरु बिन कबहुँ न हो कल्याण ।
गुरु महाराजन के राजा गुरु देवन के देव ।
गुरु अलख पुरुष गुरु अविनाशी
गुरु कामधेनु गुरु कल्पवृक्ष

गुरु चिन्तामणि
गुरु गंगा गुरु गोदावरी
गुरु पलहर केशव मुरली माधुरी
गुरु कंचन - पारस होय।
गुरु कृपा से भया अविनाशी
जां की कट गई यम की फांसी
गुरु की सेवा हर आपही कीन्ही
जा रक्षा झीवर की कीन्ही
ले बताया मही का सींग उलट सींग में दर्शनहुया
द्रवाक बिन माख माटला भरया।

शिव शंकर कहे हे पार्वती !
गुरु का द्रोही सो हर का द्रोही,
जांका मुख देखो मत कोई
मुख देख्यां मुरली कहे गुरुवां चढ़ै कलंक
दूरन्दूर विडारिये ले हरि गुरु की शरण
हरि रूठे तो गुरु बचावे ।
गुरु रूठया ठोर न पावे ।
इतनी गुरु महिमा पढ़-कथ पुनि गावे
तो भव संकट नहीं आवे,
जे कोई संकट आवे,
तो हरि का दास कहावै ।

इतनी गुरु महिमा सम्पूर्ण सही ।
गुरु गोरक्षनाथजी महाराज आपोंआप कही ।
ध्यान मूलं गुरुमुर्तिः पूजामूलं गुरुपदम् ।
मंत्र मूलं गुरु वाक्य मोक्षमूलं गुरु-कृपा ।
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय ।
बलिहारी गुरु देव की (जिन) गोविन्द दिया बताय ।।

।। गुरु शरणम् ।।

हे नाथ ! आपकी प्रेरणा से जो कर पाया हूँ वह आपको समर्पण है ।

हे प्रभो ! भूल से अज्ञान से जो गलती हुई है उसके लिए क्षमा कीजिए।

हे भगवन् ! सदा सद् बुद्धि दीजिए ताकि मैं सन्मार्ग पर अडिग रह सकूँ।

हे गुरुदेव ! अज्ञान और अन्धकार से उठाकर प्रकाश की ओर ले चलो क्योंकि मैं आपकी शरण में हूँ।

॥ सतगुरु-धुन ॥

सतगुरु साक्षी सर्वाधार, अलख निरंजन अपरंपार।
सतगुरु साक्षी सर्वाधार, अलख निरंजन अपरंपार।

॥ शिव-धुन ॥

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ।
ॐ शिव ॐ शिव टेरेजा ॥
मन का मणिया-श्वास की डोरी ।
ध्यान लगाकर फेरे जा ॥
श्रीनाथजी महाराज सबको सद्बुद्धि दें ।
भूल-चूक माफ करें,
सदा आनन्द-मंगल रखें ।
ॐ शान्ति ! प्रेम !! आनन्द !!!

।। ध्यान एवं जप ।।

कुछ समय मौन रह कर इष्टदेव का ध्यान करें।

अपने गुरुदेव के बताये हुए मंत्र का जाप करें।

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव

ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव ॐ शिव

अमरधुन

अज अविनाशी परमम् धाम्।

नाथ नारायण रमते राम ।।

॥ प्रार्थना (गुरुजी) ॥

करो रे मन गुरु चरणन का ध्यान, धरो मन गुरुचरणन का ध्यान।
देसी जी गुरु आत्म ज्ञान, करो मन गुरु चरणन का ध्यान ॥
गुरुजी ब्रह्मा, गुरुजी विष्णु, गुरुजी हैं शिव के समान ॥ करो..
गुरुजी गंगा, गुरुजी यमुना, गुरुजी हैं तीर्थ के समान ॥ करो..
गुरुजी माता, गुरुजी पिता, गुरुजी हैं देवन का देव ॥ करो..

माथे तिलक केशर सोवै, गल वैजयन्ती माल ।। करो..

काहे को दिवलो, काहें की बाती, काहें का घृत घलाय ।। करो..

तन का दिवलो, मनसा की बाती, ज्ञान का घृत घलाय ।। करो..

चोरी, अन्यायी और परायी निन्द्रा, तीन बात से टाल ।। करो..

देसी जी गुरु आत्म ज्ञान, आसी जी मेरे अन्त समय में आप ।। करो..

सेवक दास जन्म जन्म से, नैया लगासी पार ।। करो..

॥ श्री त्रिगुण स्वामीजी की आरती ॥

जय शिव ॐ कारा, प्रभु शिव ॐ कारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्धङ्गी धारा ॥ १ ॥ ॐ हर हर..
एकानन, चतुरानन, पञ्चानन राजै ।
हंसानन, गरूड़ासन, बृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ॐ हर हर..
दोय भुज चार चतुर्भुज, दस भुज तें सोहै।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहै ॥ ३ ॥ ॐ हर हर..
अक्षमाला, बनमाला, रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चन्दा, भाले शुभकारी ॥ ४ ॥ ॐ हर हर..

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ॐ हर हर..
करमध्ये च कमण्डल चक्र, त्रिशूलधर्त्ता ।
जगकर्ता, जगहर्ता, जग पालनकर्त्ता ॥ ६ ॥ ॐ हर हर..
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर 'ॐ' मध्ये, ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ॐ हर हर..
काशी में विश्वनाथ विराजत, नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत, महिमा अतिभारी ॥ ८ ॥ ॐ हर हर..
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ९ ॥ ॐ हर हर..

।। सतगुरुजी के उपदेश ।।

खान, पान, माता पिता, मिलते सब तन माहिं।
मनुज देह सदगुरु मिले, 'अमृत' यों वलि जाहिं ।। १ ।।
काया, मन अरु वचन से, कर सत गुरु की सेव।
भव सागर से तार दे, सङ्ग आपकी लेव ।। २ ।।
ध्यान धरो नित श्वास में, नयन नासिक लाय।
'अमृत' रूप अखण्ड तब, अपने घट में पाय ।। ३ ।।
बाण गुरु के शब्द का, घुसे हृदय के माहिं।
'अमृत' तब चैतन्य हो, आप आप में पाहिं ।। ४ ।।

कर्ता कोई और है, मूर्ख करै अभिमान।
मैं, मैं करना छोड़ दे, 'अमृत' उत्तम ज्ञान ॥ ५ ॥
मन का अद्‌भुत खेल है, क्षण क्षण बदले रूप।
'अमृत' मन महादेव है, सकल जगत का भूप ॥ ६ ॥
तीन भाँति की भक्ति है, तीन भाँति का त्याग।
इनसे सुख दुख पावही, 'अमृत' त्रेविधि भाग ॥ ७ ॥
ज्ञान तपस्या दान व्रत, तीन भाँति का जान।
सत, रज, तम, 'अमृत' कहे, श्रद्धा योगरू ज्ञान ॥ ८ ॥
मिलै हर्ष माने नहीं, गये शोक नहीं होय।
'अमृत' ऐसे संत जन, लाखों में हो कोय ॥ ९ ॥

नेत्र नासिक स्थिर किये, जाने अपना रूप ।
विविध भाँति कौतुक लखै, पावै ज्ञान अनूप ॥ १० ॥
ॐ-कार के मध्य है, चार वेद का भेद ।
स्थिति पालन संहार मय, सुखद मंत्र हर खेद ॥ ११ ॥
सत्य कर्म, सत् साधना, सतगुरु का सत्संग ।
सत्य वचन, सत् नाम जप, 'शंकर' सत्य उमंग ॥ १२ ॥
साधन एक प्रधान है, श्वास माहिं रत होय ।
'शंकर' अपने रूप को, पाते घट में सोय ॥ १३ ॥
ध्यान श्वास का राखिये, नयन नासिका धार ।
जाने अपना रूप तब, 'अमृत' ज्ञान अपार ॥ १४ ॥

कहता हूँ 'अमृत' सदा, कहा बजाऊँ ढोल ।
श्वास श्वास में जा रहा, तीन लोक का मोल ।। १५ ।।
नयन नासिका स्थिर किये, धरे श्वास का ध्यान ।
'अमृत' तब ही होयगा, प्राप्त विमल विज्ञान ।। १६ ।।
श्वास देह में घटत हैं, ज्यों दीपक में तेल ।
'अमृत' अवसर जा रहा, पूरा होता खेल ।। १७ ।।
अन्तरयामी रूप को, बाहर कैसे पाय ।
दुध माहिं 'अमृत' रमा, बाहर है घृत नाँय ।। १८ ।।
विद्या, बल, आश्रम वरण, मान बड़ाई त्याग ।
'अमृत' गुरु सेवा करे, धन्य उन्हीं के भाग ।। १९ ।।

प्रेम बिना नहीं भक्ति है, प्रेम बिना नहीं योग।
प्रेम बिना नहीं ज्ञान है, मिटे न भव के भोग ॥ २० ॥
अपना रूप विसार कर, जो है सत्य स्वरुप।
बाहर को खोजत फिरे, गिरे अँधेरे कूप ॥ २१ ॥
अपना आपा भूलकर, बाहर करता खोज।
'अमृत' कैसे मिल सके, चिदानन्द की मौज ॥ २२ ॥
सुरति निरति का खेल है, जो कोई जाने खेल।
'अमृत' पासा अगम का, झेल सके तो झेल ॥ २३ ॥
सुरति लिपट गई शिखर में, रहा न तन पर ज्ञान।
'अमृत' अपने रूप में, सदा रहे गलतान ॥ २४ ॥

सुरति टिकी अनुभव खुला, धुल गया मन का मैल।
'अमृत' आतम नगर की, मिली सुहेली गैल ॥ २५ ॥
खट्टा, मीठा सलौना, और नारी का प्रेम।
त्यागे तब 'शंकर' रहे, साधु सन्त की क्षेम ॥ २६ ॥
मन की लीला प्रबल है, यों कहते सन्त।
जो उसको निश्चल करे, वो पावे सत्पन्थ ॥ २७ ॥
सकल तीर्थ गुरु चरण में, सेवा जप तप योग।
वचन वेद के सूत्र है, शंकर हट गया रोग ॥ २८ ॥

ॐ शान्ति ! प्रेम !! आनन्द !!!

ऊँ हीं श्री गोरक्ष हूं,

फट् स्वाहा ।।